NOVATEUR PUBLICATIONS
JournalNX- A Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN No: 2581 - 4230
VOLUME 6, ISSUE 7, July -2020

# द्वि-वर्षीय बी. एड. शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि

**लेखक - विनिता कुमारी**
**यू.जी.सी. नेट., पीएच.डी. शोधार्थी (शिक्षाशास्त्र)**
**संत जेवियर्स कॉलेज ऑफ़ एजुकेशन (स्वायत्त)**
**आर्यभट्ट ज्ञान वि'वविद्यालय पटना, से संबद्ध**

**सह लेखक - विनय कुमार**
**जे.आर.एफ., पीएच.डी. शोधार्थी (शिक्षाशास्त्र)**
**सेन्ट्रल यूनिवर्सिटी ऑफ साऊथ बिहार, गया**

## सार

शिक्षा एक महत्वपूर्ण और सर्वव्यापी विषय है । यह मानव की उपलब्धि है । शिक्षा का उद्देश्य समाज के उद्देश्य पर आधारित होता है | शिक्षा को औपचारिक या अनौपचारिक तरीके से प्रदान करने के लिए शिक्षक की आवश्यकता होती है तथा शिक्षक को शिक्षक बनने के लिए अध्यापक शिक्षा की आवश्यकता | प्रस्तुत शोध "**द्वि-वर्षीय बी. एड. शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि"** पर आधारित है । इस शोध का उद्देश्य लिंग, शिक्षण-माध्यम एवं निवास- स्थान के आधार पर द्वि-वर्षीय बी. एड. शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि में सार्थक अंतर का अध्ययन करना है। इस शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है । यादृच्छिक प्रतिचयन विधि के द्वारा 200 बी.एड.महाविद्यालय के शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों को चयनित किया गया । इस अध्ययन में स्वनिर्मित एवं वैद्यीकृत द्वि-वर्षीय बी. एड. शैक्षणिक उपलब्धि मापनी का प्रयोग किया गया । आंकड़ों के विश्लेषण के लिए टी-अनुपात का प्रयोग किया गया । इस अध्ययन से निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि द्वि-वर्षीय बी. एड. पाठ्यचर्या के प्रति शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि

औसतन अच्छी है । लिंग , शिक्षण माध्यम तथा निवास-स्थान के आधार पर द्वि-वर्षीय बी. एड. शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया गया ।

**मुख्य बिंदु** : द्वि-वर्षीय बी. एड. शिक्षक-प्रशिक्षणार्थी, शैक्षणिक उपलब्धि तथा अध्यापक शिक्षा |

## परिचय

शिक्षा मनुष्य को अन्धकार से प्रकाश की ओर, निराशा से आशा की ओर तथा अज्ञान से ज्ञान की ओर अग्रसर करती है | प्रत्येक मनुष्य जन्म से मृत्यु तक जो कुछ सिखता है, अनुभव करता है, तथा अपनाता है वह शिक्षा ही है, शिक्षा के द्वारा समृद्धि प्राप्त कर मनुष्य एक कुशल जीवन व्यतीत करने में सफल होता है | शिक्षा प्राप्त करने के विविध माध्यम है जिसके द्वारा किसी व्यक्ति को शिक्षित किया जाता है | जैसे- औपचारिक, गैर-औपचारिक तथा अनौपचारिक शिक्षा इत्यादि | औपचारिक शिक्षा के लिए व्यक्ति को निश्चित शिक्षण – अधिगम प्रकिया, तथा पाठ्यचर्या के प्रविधियों से होकर गुजरना पड़ता है | इसके साथ ही शिक्षा ग्रहण करने के लिए शिक्षण-अधिगम वातावरण, शिक्षक,विद्यार्थी तथा पाठ्यचर्या का होना अनिवार्य है ,तभी शिक्षण- अधिगम प्रक्रिया सही दिशा में संचालित हो पाती है | शिक्षण -अधिगम प्रक्रिया के तीन महत्वपूर्ण अंग- शिक्षक,विद्यार्थी तथा पाठ्यचर्या है | यदि देखा जाये तो एक विद्यार्थी अपने शिक्षक से शिक्षा ग्रहण करता है और वह शिक्षण कार्य निश्चित पाठ्यचर्या पर निर्धारित होती है | जिस प्रकार एक शिक्षक अपने विद्यार्थी को शिक्षित करता है ठीक उसी प्रकार शिक्षक भी इस स्थान तक पहुचने के लिए प्रशिक्षण लेता है, जिससे वह शिक्षण कार्य के लिए औचारिक रूप से तैयार हो जाये | यह कार्य शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों के प्रशिक्षण के माध्यम से पूरा किया जाता है | शिक्षक-प्रशिक्षण विविध स्तर पर तथा विविध रूपों में दिया जाता है , जैसे- डी. एड.(डिप्लोमा इन एजुकेशन), डी. एल. एड.(डिप्लोमा इन एलेमेंट्री एजुकेशन),बी.एड.(बैचलर इन एजुकेशन)तथा एम. एड.(मास्टर्स इन एजुकेशन) इत्यादि |

## अध्ययन की सार्थकता

यह अध्ययन द्वि-वर्षीय बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि पर आधारित है | शिक्षा के माध्यम से मनोवृत्ति में परिवर्तन होता है तथा मनोवृत्ति के आधार पर व्यक्ति अपने शैक्षणिक उपलब्धि को हासिल करने में सफल होता है, इसके साथ ही इस शोध का ये भी प्रयास है की शिक्षक जो राष्ट्र विकास एवं सामाजिक परिवर्तन में मुख्य भूमिका निभाते है वे स्वयं द्वि वर्षीय बी. एड. पाठ्यचर्या के प्रति साकारात्मक मनोवृति विकसित करें जिससे उनकी शैक्षिक उपलब्धि उत्तम हो | यह अध्ययन द्वि वर्षीय बी. एड. शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि के स्तर को जॉचने में सहायक है | द्वि-वर्षीय बी. एड. पाठ्यचर्या में सम्मिलित कार्यक्रम जैसे – सैद्धांतिक-पत्र,विधि-पत्र, ई.पी. सी.,शिक्षण-अवलोकन, शिक्षण-अभ्यास,पाठ्य –सहगामी क्रियाएं इत्यादि है, जो प्रशिक्षणार्थियों की उपलब्धि पर प्रभाव का पता लगाने में सहायक है| द्वि-वर्षीय बी. एड. पाठ्यचर्या शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों के विकसित कौशल को जानने में सहायक | द्वि- वर्षीय बी. एड. पाठ्यचर्या के प्रति शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों के सोच के आधार पर उनकी मनोवृत्ति के स्तर को जॉचने में सहायक | इस शोध के आधार पर पाठ्यचर्या के निर्माण, मूल्यांकन एवं संशोधन में सहायता मिलेगी |

## सम्बंधित साहित्य की समीक्षा

**बाहुबली,** (2017 ) ने बी.एड. शिक्षक प्रशिक्षु की भावनात्मक बुद्धिमत्ता और शैक्षणिक उपलब्धि एक सहसंबंध का अध्ययन किया| जिसका उद्देश्य बी.एड. शिक्षक प्रशिक्षु की भावनात्मक बुद्धिमत्ता और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच संबंधों की जांच करना है | शोध से पाया गया कि पुरुष और महिला दोनों बी.एड. शिक्षक प्रशिक्षुओं के बीच शैक्षणिक उपलब्धि और भावनात्मक बुद्धिमत्ता के बीच कम सकारात्मक सहसंबंध है| उच्च भावुक बुद्धि वाले बी.एड. पुरुष शिक्षक ने महिला बी.एड से बेहतर स्कोर किया| भावनात्मक बुद्धिमत्ता, बी.एड. शिक्षक प्रशिक्षु अच्छे अकादमिक प्राप्तकर्ता हैं।

**शशिकला** (2012) ने शिक्षक प्रशिक्षु के अध्ययन कौशल और शैक्षणिक उपलब्धि का प्रभाव पर अध्ययन किया और पाया की वर्तमान अध्ययन से यह निष्कर्ष निकाला गया है कि शिक्षक प्रशिक्षुओं की शैक्षणिक उपलब्धि शिक्षा कार्यक्रम - बी.एड. अनुकूल विकसित करने में मदद करता

है इसलिए सभी शिक्षकों के स्तर यानी स्कूल, कॉलेज औरविश्वविद्यालय को किसी प्रकार की शिक्षक शिक्षा से गुजरना चाहिए। शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों को आधुनिक बनाना चाहिए| शिक्षक के साथ बातचीत होनी चाहिए | इस प्रकार शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम के दौरान बी.एड.शिक्षक प्रशिक्षुओं को विभिन्न प्रकार के अनुभव होते हैं जो व्यवहार और शैक्षणिक उपलब्धि को आकार देने के लिए जिम्मेदार है।

**शल्य परिभाषा**

शोधार्थी में शोध में आने वाले विशिष्ट पदों का वर्णन निम्नलिखित तरीके से किया है :-

**बी. एड. पाठ्यचर्या के आधार प्रशिक्षणार्थियों की उपलब्धि**:- 'उपलब्धि' पद का प्रयोग शोधार्थी ने अपने शोध में शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों की द्वि-वर्षीय न. एड. पाठ्यचर्या के फलस्वरूप प्राप्त शैक्षणिक सफलता से लिया है | अर्थात् बी. एड. पाठ्यचर्या शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों में शैक्षणिक योग्यता, व्यवहारिक ज्ञान, सामाजिक कुशलत, तथा व्यक्ति के सर्वागिण कुशलता के रूप में देखा जा सकता है | उपलब्धि से तात्पर्य शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षणिक निष्पति से है | शिक्षक –प्रशिक्षणार्थियों के बी. एड.कोर्स पूरा करने के उपरान्त उनकी योग्यता,कुशकता,दक्षता, निपुणता से है | तथा साथ ही उनकी शिक्षण - अधिगम तथा शिक्षण-प्रशिक्षण कार्य में सफलता से है | शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों की उपलब्धि उनकी मानसिक योग्यता, अभिक्षमता, मनवृत्ति, परिवेश,शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया,अधिगम-विधि इत्यादि पर निर्भर करती है|

**शोध उद्देश्य**

लिंग के आधार पर द्वि- वर्षीय बी. एड. पाठ्यचर्या के प्रति शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों के शैक्षणिक उपलब्धि में सार्थक अंतर को जॉचना |

भाषायिक-माध्यम के आधार पर द्वि- वर्षीय बी. एड. पाठ्यचर्या के प्रति शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों के शैक्षणिक उपलब्धि में सार्थक अंतर का ऑकलन करना |

NOVATEUR PUBLICATIONS
JournalNX- A Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN No: 2581 - 4230
VOLUME 6, ISSUE 7, July -2020

निवास- स्थान के आधार पर द्वि -वर्षीय बी. एड. पाठ्यचर्या के प्रति शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों के शैक्षणिक उपलब्धि में सार्थक अंतर को जॉचना |

## शोध विधि

शोध समस्या के अनुरूप आकाड़ो के संकलन के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है| आकाड़ो के संकलन के लिए पटना को लिया गया है| जिसमें 200 शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों का चयन यादृच्छिक विधि से किया गया है| प्रस्तुत शोध में निम्नलिखित स्व-निर्मित तथा वैधिकृत उपकरणों को प्रयोग किया गया है-

## प्रदत्त संग्रह की प्रक्रिया

सर्वप्रथम शोधार्थी ने प्रतिदर्श के रूप में चयनित महाविद्यालय में जाकर शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों को अनुसन्धान में लाये जाने वाले उपकरणों से परिचय कराया | पुन: शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों पर उपकरण को क्रियान्वित किया|

## अध्ययन के समष्टि एवं प्रतिदर्श

शोधार्थी ने प्रतिदर्श के रूप में दो सौ शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों का चयन किया, जो सरकारी मिशनरी तथा प्राईवेट शिक्षण संस्थानों से थे |

## उपकरण

स्वनिर्मित एवं वैधिकृत द्वि -वर्षीय बी. एड. शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि निर्धारण मापनी|

## संख्यांकीय तकनीक का प्रयोग

माध्य , प्रमाणित विचलन तथा टी-अनुपात

## अध्ययन की परिसीमाएँ

समिष्टि के रूप में पटना शहर के शिक्षा- बिभाग के बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों को लिया गया है|

प्रतिदर्श के रूप में केवल 200 बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों को लिया गया है|

## परिकल्पनाएं

शोधार्थी ने शोध के लिए विशिष्ट उद्देश्य के अधर पर निम्नलिखित परिकल्पनाओं को बनाया है-

लिंग के आधार पर द्वि -वर्षीय बी. एड. शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों के मध्य शैक्षणिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है |

भाषायिक – माध्यम के आधार पर द्वि- वर्षीय बी. एड. शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों के मध्य शैक्षणिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है |

निवास- स्थान के आधार पर द्वि- वर्षीय बी. एड. शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों के मध्य शैक्षणिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है |

## परिकल्पनाओं का विभेदक विश्लेषण

**नल परिकल्पना 1-** लिंग के आधार पर द्वि -वर्षीय बी. एड. शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों के मध्य शैक्षणिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं है |

### तालिका -1

लिंग के आधार पर द्वि- वर्षीय बी. एड. शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि का टी-मूल्य प्रदर्शन |

| | माध्य | मानक विचलन | संख्या | टी | पी | टिप्पणी |
|---|---|---|---|---|---|---|
| महिला | 36.04 | 8.91 | 144 | 1.01 | 0,3. | सार्थक नहीं |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| पुरुष | 34.92 | 6.03 | 56 | | | |

(5% सार्थकता स्तर पर 198 स्वत्रंता अंश के लिए तालिका मूल्य 1.96 )

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि लिंग के आधार पर प्राप्त टी-मूल्य का मान 0.01 है जो 5 % सार्थकता स्तर के तालिका मान (1.96) सारणी मूल्य से कम है इसलिए नल परिकल्पना को स्वीकार किया जाता है | अर्थात् लिंग के आधार पर द्वि-वर्षीय बी.एड. शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के मध्य शैक्षणिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं है|

**नल परिकल्पना - 2** भाषायिक –माध्यम के आधार पर द्वि- वर्षीय बी. एड. शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों के मध्य शैक्षणिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं है |

**तालिका - 2**

भाषायिक-माध्यम के पर आधार द्वि- वर्षीय बी. एड. शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि का टी-मूल्य प्रदर्शन |

| | माध्य | मानक विचलन | संख्या | टी | पी | टिप्पणी |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अंग्रेजी माध्यम | 36.06 | 9.79 | 108 | 0.56 | 0.51 | सार्थक नहीं |
| हिन्दी माध्यम | 35.35 | 5.73 | 92 | | | |

(5% सार्थकता स्तर पर 198 स्वत्रंता अंश के लिए तालिका मूल्य 1.96 )

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि भाषायिक- माध्यम के आधार पर प्राप्त टी-मूल्य का मान 0.56 है जो 5 % सार्थकता स्तर के तालिका मान (1.96) सारणी मूल्य से कम है इसलिए नल परिकल्पना को स्वीकार किया जाता है | अर्थात् भाषायिक- माध्यम के आधार पर भी वर्षीय बी.एड. शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों के मध्य शैक्षणिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं है|

**नल परिकल्पना 3-** निवास- स्थान के आधार पर द्वि- वर्षीय बी. एड. शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों के

मध्य शैक्षणिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं है |

**तालिका - 3**

निवास- स्थान के पर आधार द्वि- वर्षीय बी. एड. शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि का टी-मूल्य प्रदर्शन |

| | माध्य | मानक विचलन | संख्या | टी | पी | टिप्पणी |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ग्रामीण | 35.27 | 4.76 | 58 | 0.94 | 0.52 | सार्थक नहीं |
| शहरी | 35.91 | 9.21 | 142 | | | |

(5% सार्थकता स्तर पर 198 स्वत्रंता अंश के लिए तालिका मूल्य 1.96 )

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि निवास- स्थान के आधार पर प्राप्त टी-मूल्य का मान 0.94 है जो 5 % सार्थकता स्तर के तालिका मान (1.96) सारणी मूल्य से कम है इसलिए नल परिकल्पना को स्वीकार किया जाता है | अर्थात् निवास- स्थान के आधार पर भी द्वि - वर्षीय बी.एड. शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों के मध्य शैक्षणिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं है|

## शोध अध्ययन के निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन में द्वि-वर्षीय बी.एड. शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि का अध्ययन करने के पश्चात् शोधार्थी द्वारा निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं :

**नल परिकल्पना** -1 लिंग के आधार पर द्वि -वर्षीय बी. एड. शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों के मध्य शैक्षणिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं है अर्थात् पुरुष तथा महिला शिक्षक-प्रशिक्षणार्थी की शैक्षणिक उपलब्धि समान है | इसका कारण उनकी लगन तथा मेहनत हो सकती है |

**नल परिकल्पना** -2 भाषायिक –माध्यम के आधार पर द्वि- वर्षीय बी. एड. शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों के मध्य शैक्षणिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं है अर्थात् हिन्दी तथा अंग्रेजी भाषा में अध्ययन करनेवाले शिक्षक-प्रशिक्षणार्थी शैक्षणिक उपलब्धि में भाषा को बाधा नहीं मानते होंगे जिसके कारण उनकी शैक्षणिक उपलब्धि समान है|

**नल परिकल्पना** -3 निवास- स्थान के आधार पर द्वि- वर्षीय बी. एड. शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों के मध्य शैक्षणिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं है अर्थात् ग्रामीण तथा शहरी शिक्षक-प्रशिक्षणार्थी एक आदर्श एवं कुशल शिक्षक बनना चाहते होंगे जिसके कारण वे मेहनत करते है जिसके कारण उनकी शैक्षणिक उपलब्धि एक समान है|

प्रस्तत अध्ययन से ज्ञात होता है कि शैक्षिक उपलब्धि पर लिंग, माध्यम तथा निवास- स्थान पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है |

**सन्दर्भ सूची**

कपूर,बी.(2011).शिक्षा में मापन और मूल्यांकन एवं सांख्यकी,अग्रवाल पब्लिकेशन

कॉल, बी.(2010).शैक्षिक अनुसन्धान की कार्यप्रणाली,विकास पब्लिकेशन हॉउस प्रा.लि.नई दिल्ली

गुप्ता,एस.पी., अल्का.(2008).शैक्षिक मापन एवं मूल्यांकन,शारदा पुस्तक भवन.आगरा

त्यागी, जी.(2010). भारतीय शिक्षा का परिदृश्य, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा

माथुर,एस.एस.(2013).शिक्षा की दार्शनिक तथा सामाजिक आधार,अग्रवाल पब्लिकेशन ,आगरा

मंगल, एस.के.(2008).शिक्षा में सांख्यिकी पी.एच.आई.,प्र.लि.जयपुर

वालिया, जे.(2010).शिक्षा तकनीक. अहम पाल पब्लिशर्स, पंजाब

बाहुबली,रेड्डी,(2017). बी.एड. शिक्षक प्रशिक्षु की भावनात्मक बुद्धिमत्ता और शैक्षणिक उपलब्धि एक सहसंबंध, *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ क्रिएटिव रिसर्च विचार*, खंड 5, अंक 4 ISSN: 2320-2882

शशिकला),2012). शिक्षक प्रशिक्षु के अध्ययन कौशल और शैक्षणिक उपलब्धि का प्रभाव, *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ साइंटिफिक एंड रिसर्च पब्लिकेशन*, खंड 2, अंक 11,